International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 323-326

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 323-326
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-07-2020
Accepted: 12-08-2020

डॉ. भारती निश्छल
गंगवारा, सारामोहनपुर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. भारती निश्छल
गंगवारा, सारामोहनपुर, दरभंगा, बिहार, भारत

'वैदेहीचरितम्' में उपमा का सौन्दर्य

डॉ. भारती निश्छल

सारांश
'वैदेहीचरितम्' पंडित रामचन्द्र मिश्र के द्वारा रचित ऐसा संस्कृत–महाकाव्य है, जिसमें कवि की भावयित्री और कारयित्री–दोनों ही प्रतिमाओं का प्रकाश विकीर्ण हुआ है। कवि ने काव्य की आत्मा के साथ–साथ उसके शरीर–शब्द और अर्थ–को भी सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाने में सफलता प्राप्त की है। काव्य–सौन्दर्य के वर्द्धक उपादान को काव्यशास्त्र में 'अलंकार' कहा गया है और अलंकारों में उपमा को 'अलंकारशिरोरत्न', 'काव्य–सम्पदा का सौन्दर्य' तथा कविकुल के लिए माता के समान उपकारी बताया गया है। इस अलंकार की अनेक मनोहर छवियाँ 'वैदेहीचरितम्' में दृष्टिगोचर होती हैं।
इस कृति में मिथिला को 'त्रिलोकीतिलक' के समान, यहाँ के उद्यान को कामदेव के मन्दिर के समान उद्यान के चम्पक–पुष्पों को दीपमाला के समान तथा कोयलों की कूक को वेदपाठ के समान बताया गया है। इसी प्रकार, फालाग्र भाग से प्रकट हुई सीता का रंग चम्पक पुष्प के समान, उसकी नाक तिल–पुष्प के समान, उसके हाथ प्रकाशमान कमल के समान और वह स्वयं पृथ्वी को प्रकाशित करती चन्द्रकला के समान प्रतीत होती थी। सम्पूर्ण कृति में कवि का उपमा–प्रयोग हृदयावर्जक और मौलिक उद्भावनाओं से युक्त है।

प्रस्तावना
'वैदेहीचरितम्' संस्कृत में रचित महाकाव्य है और इसके रचयिता पंडित रामचन्द्र मिश्र परंपरागत संस्कृत–शिक्षा प्राप्त विद्वान हैं। इस काव्य में कवि ने भावयित्री प्रतिभा के साथ–साथ कारयित्री प्रतिभा का भी प्रभूत परिचय दिया है। काव्य की आत्मा को सौन्दर्य–संवलित करने के साथ ही उन्होंने काव्य शरीर–शब्द और अर्थ– को भी सुन्दर बनाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। शब्द और अर्थ को सौन्दर्य प्रदान करने वाले एवं उनके सौन्दर्य को बढ़ाने वाले साधनों में अलंकार की गणना सर्वप्रथम की जाती है। 'वैदेहीचरितम्' काव्य में अलंकारों की मनोहारिणी अवस्थिति इसके प्रायः प्रत्येक पृष्ठ में मिलती है। अलंकारों में भी सर्वप्रमुख–उपमा–के, कवि ने, अनेक सुन्दर प्रयोग किये हैं। सादृश्यमूलक अलंकारों में उपमा सर्वप्रमख है और यही अर्थालंकारों का मूलाधार है। सादृश्यमूलक अन्य अलंकार तो इसी के रूपांतर हैं। पंडितराज जगन्नाथ भी उपमा को 'विपुलालंकारान्तर्वर्तिनी' कहकर पुकारते हैं। रुय्यक ने भी उपमा को अनेक अलंकारों का बीजरूप बताया है– 'उपमैव च प्रकारवैचित्र्येणानेकालंकार बीजभूतेति प्रथमं निर्दिष्टा'। काव्यमीमांसाकार राजशेखर ने और भी आगे बढ़कर बताया है कि उपमा अलंकार 'अलंकारशिरोत्न' है, 'काव्यसंपदा का सर्वस्व' है और कविकुल के लिए माता के समान उपकारी एवं हितचिन्तक है :

"अलंकारशिरोरत्नं सर्वस्वं काव्यसम्पदाम्।
उपमा कविवंशस्य मातैवेति मतिर्मम।।" [1]

माता के समान कवियों की हितकारिणी इस उपमा अलंकार की अनेक मनोहर छवियाँ 'वैदेहीचरितम्' में दर्शनीय हैं। प्रथम सर्ग में मिथिला को तीनों लोक के तिलक के समान बताया गया है :

"यां मानवा मानमुपानयन्ति देवास्तथाऽत्यादरतः श्रयन्ते।
नागश्च भीत्येव समानमन्ति साऽऽसीत्त्रलोकीतिलकायमाना।।" [2]

मिथिला के उद्यान को कामदेव के मंदिर के समान, उद्यान के चंपक–पुष्पों को दीपमाला के समान तथा कोयलों की कूक को वेद–पाठ के समान वर्णन किया गया है :

"चाम्पेयपुष्पावलिदीपमालं कूलत्पिकालीश्रुतिपाठपूतम्।
निपीय दृग्भिर्मुदिता जनौघा यत्कामदेवायतनं गृणन्ति।।" [3]

महराजा जनक के लक्ष्मीनिवास रत्नों के बाजार की तरह प्रकाशित होते हैं, उनका भवन पथिकों को कुबेर के भवन के समान प्रतीत होता है :

"रत्नापणाभानवभासमानान् लक्ष्मीनिवासानवलोक्य राज्ञः।
पथा प्रयातुः पुरुषस्य चेतः सस्मार सद्यो धनदालयस्य।।" [4]

मिथिला की तुलना स्वर्ग से एवं उसके पालनकर्ता और रक्षक महाराजा जनक की तुलना इन्द्र से की गयी है :

"गोपायितुस्तां स्वगुणाभिरामां पुरीमिवेन्द्रस्य दिवं समृद्धाम्।
निर्मुष्टबाधोदयवैकृतानि जग्मुर्दिनानि स्थिरशान्तिकानि।।" [5]

म्लान–मुख जनता के अवलोकन से क्षुब्ध महाराजा जनक को क्षुब्ध सागर से उपमित किया गया है :

"जयेति जीवेति च भाषमाणां म्लाननां तां जनतां समीक्ष्य।
उद्दामवातक्षुभितान्तरस्य सिन्वोस्तुलां भूमिपतिर्जगाहे।" [6]

महाराजा जनक और महारानी सुनैना की तुलना प्रभा (कांति) के साथ उचित होते हुए सूर्य से की गयी है :

"उपेत्य यज्ञावनिमंशुमाली प्राचीमिव स्वप्रमयेव राज्ञया।
स्मं, समन्तादेवलोक्य भूमीसंस्कारकृत्याय य सन्ननाह।।" [7]

सुडौल शरीर, विशाल नेत्र, ऊँचे कन्धों, उठी हुई नाक और आजानबाहु वाले, शिव के भक्त, लोकों में श्रेष्ठ, सात्विक वेष–भूषा और उदीयमान कान्तियुक्त महाराजा जनक को मनुष्य के रूप में आगे बढ़ते हुए साक्षात् धर्मराज से उपमित किया गया है :

"सुरेखकार्य विशदाक्षिकोणं समुन्नमत्कन्धरमुच्चघोषम्।
आजानुबाहुं रिपुचन्द्रराहुं शिवावदानं जगतीप्रधानम्।।" [8]

बालिका सीता जिस समय फालाग्र भाग से प्रकट हुई, उस समय उसका रंग चम्पा पुष्प के रंग के समान गोरा, उसकी नाक तिल–पुष्प के समान, उसके हाथ प्रकाशमान कमल के समान और वह स्वयं भूमि पर अवतरित होकर पृथ्वी को प्रकाशित करती हुई चन्द्रकला के समान दिखती है :

"चाम्पेयगौरी सतिलप्रसूननासा समुद्भासिसरोजहस्ता।
परिस्फुटरत्केशरकेशराशिः सापुष्पमालेव दृशो बबन्ध।।" [9]

कन्या सीता की कान्ति स्वर्ण के समान थी। सुन्दर पात्र में विराजमान उस कन्या को हाथ में धारण करती हुई महरानी सुनैना भी चन्द्रकला से सुशोभित प्राची दिशा की तरह चमक रही थी :

"करे दधाना तषनीयभासं कन्यां सुपात्रोचितसन्निवेशाम्।
समुल्लसच्चन्द्रकलाऽऽविलाभा प्राचीन राज्ञी सुतरां दिदीपे।।" [10]

बाल्यावस्था को त्यागकर किशोरावस्था–रूप नये विकास को प्राप्त करनेवाली सीता की तुलना विकसनविरोधी पत्रावरोध को हटाकर खेलनेवाली कमल–कालिका से की गयी है :

"उत्सृज्य बाल्यं कलिकेव पाद्मी पत्रावरोधं स्फुटनप्रतीपम्।
कैशोरमासाद्य नवं विकासं सा विश्वमेवाभिनवं ददर्श।।" [11]

स्वर्ण की भाँति उद्भासित शरीर कान्तिवाली सीता जब शरतकालिक मेघ के समान उज्ज्वल वस्त्र धारण करती थी, तब वह सुभ्रू नदी में प्रवाहित स्वच्छ जल समुदाय से लिपटी हुई स्वर्ण–भूमि की तरह शोभायमान होती थी :

"जाम्बूनदोद्भासिशरीरकान्तिर्वासो वसाना शरदभ्रशुभ्रम।
नदीप्रवाहोच्छलदम्बुलिप्तां हेमावनी सानुचकार सुभ्रुः।।" [12]

सीता के विविध अंगों में सौन्दर्य की अतिशयता थी। उसकी नाभि दरिया के भँवर के समान, उसका मुख शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान, उसकी आँखें मृगी की आँखों के समान, और उसके होठ मूंगे के समान लाल थे :

"तस्या नदावर्त्तसनाभिनाभेरकृष्णपक्षेन्दुसमाननायाः।
एणीदृशो विद्रुमभाधरायाः सौन्दर्यमासीदभिमानभंगे।। [13]

विवाह–संस्कार की अवस्था को प्राप्त नवयौवना सीता दर्शकों की दोनों आँखों को आम्रवन में उत्पन्न मंजरी की तरह, स्वच्छ जल में उत्पन्न कमलिनी की तरह और अतिशय विकसित होती हुई शुभ्र मल्लिका पुष्प की तरह सुख प्रदान करती थी :

"सा मंजरीवाम्रवनीप्ररूढ़ा सरोजिनी वामलवारिजाता।
सफुरद्विकासा शुभमल्लिकेव प्रमोदमक्ष्णोर्जनयत्यभीक्ष्णम्।।" [14]

सीता के स्वयंवर एवं विवाह के निमित्त प्रयत्नों को शुभारम्भ करने की बात महाराजा जनक से सुनकर महारानी सुनैना उसी प्रकार प्रसन्न हो जाती है, जिस प्रकार मेघ–गर्जन को सुनकर चातकी आनन्द–राशि में डूब जाती है :

"इति नरपतिवाचं चातकीवाभ्रघोषं श्रवसि कृतवती साऽऽनन्दराशौ निमज्ज्य।
प्लवमिव न चिरेणाम्भोजशोमं सुताया निजभवनमिताया आननं पश्यतिस्म।।" [15]

सीता की स्वयंवर सभा में उपस्थित राजाओं के हृदय की पवित्र सुन्दरता के वर्णन में भी उपमा अलंकार की छटा मनमोहक है। आगत राजाओं ने मिथिला की अतिथि–पूजा–विधि को श्रेष्ठ और प्रशंसनीय माना, क्योंकि उनके हृदय में सूर्य–किरणों से विकसित पुष्प–समुदाय की तरह पवित्र सुन्दरता का निवास था तथा उनका हृदय पूजाकालिक स्नानापरायण लोगों के लिए पवित्र तालाब के समान था :

"ते सुखशयिता रजनी निन्युः क्लेशास्पृष्टाः।
मिथिलातिथिपूजास्तैश्चेतसि वरा विमृष्टा।।
रविरुचिबोधितकुसुमजातशुचिसुषमागारे।
पूजास्नानापरायणजनतावृतकासारे।।" [16]

श्रीराम को वरमाला समर्पित करती हुई वैदेही सिंधुतट पर लक्ष्मी की तरह सुशोभित हो रही थी और राम मनुष्य शरीर धारण करनेवाले विष्णु के समान प्रतीत हो रहे थे :

"समर्पयन्ती वरमालां शुशुभे वैदेही।
श्रीरिव सिन्धुतटे रामो हरिरिव नरदेही।।
आकेकरनयनेन राममालोकत सीता।
प्राग्भवपुण्यचयोदितया हृन्मुदा परीता।।" [17]

जनक–दूत के अयोध्या पहुँचने पर महाराजा दशरथ की शोभा का उत्कृष्ट वर्णन किया गया है, जिसमें पूर्णोपमा अलंकार की छटा अवलोकनीय है। जनक–दूतों ने वहाँ पहुँचकर देखा कि अपने

प्रधानमंत्रियों से घिरे हुए महाराजा दशरथ नक्षत्र–मंडल के बीच सुशोभित चन्द्रमा की तरह तेज और विशालता से युक्त थे :

"दशरथविषयाणां भावनानां प्रवाहैरिव सपदि पुरस्तान्नीयमाना जवेन।
ददृशुरवनिपालं ते स्वेतेजोविशालं परिधिगतमिवेन्दु मन्त्रिमुख्यरूपेतम्।।" [19]

पीतवस्त्र धारण कर विवाह–मंडप पर विराजमान निर्व्याज शोभाशाली श्रीरामभद्र स्वर्ग मे इन्द्र की तरह, आकाश में भगवान भास्कर की तरह, सरोवर में कमल की तरह और वेदी पर अग्निदेव की तरह सुशोभित हो रहे हैं :

"त्रिदिव इव सुरेशो व्योम्नि भास्वानिवेद्धः कमलमिव सरस्यां कृष्णवर्मेव वेद्याम्।
मणिरिव शुचिपीठे पीतवस्त्रोपवीतोऽद्युतदनुपधिसुश्रीमण्डपे रामभद्रः।।" [20]

विवाहोपरान्त बामभाग में स्थित जनकनन्दिनी के अंग में अपने शरीर के प्रतिबिम्वित होने पर श्रीराम उस अर्द्धनारीश्वर कामरिपु शंकर के समान प्रतीत हो रहे थे, जो समुद्र–तट पर हलाहल–पान से नीली कान्ति वाले हो गये हैं :

"प्रतिफलति शरीरे वामभागे स्थिताया जनकदुहितुरंगे व्यक्तसक्तानार्धम्।
जलधितटनिपीतक्ष्वेडनीलावभासं स्मरहरमनुचक्रे रामचन्द्रस्तदानीम्।।"[20]

अयोध्यानगरी के ध्वज से शोभायमान ऊँचे महल को सुमेरु पर्वत से तथा सीता की प्रलोमजा नामक अप्सरा से तथा अयोध्या की स्वर्ग से उपमा दी गयी है :

"कदाचिदाभजितवैजयन्तं सुमेरुशृङ्गं महसा जयन्तम्।
प्रासादमारुह्य पुलोमजेव दिवं निजां सा नगरी ददर्श।।" [21]

सीता को महाराजा दशरथ शरीरधारिणी राजलक्ष्मी के समान, माताएँ अन्तःपुर की दीपप्रभा के समान तथा श्रीराम अपनी ही अपर देह के समान आनन्ददायक अनुभव करते थे। अपने सन्मित्रों के साथ आवाससदमान में विराजमान राम की उपमा उदयाचल पर विराजमान चन्द्रमा से दी गयी है :

"इत्युक्तवन्तं स्मयमानवक्त्रं प्रणम्य राजानमविक्रियास्यः।
रामः सुहृद्भि सह वाससम स्वमाजगामेन्दुरिवोदयाद्रिम्।।" [22]

इसी प्रकार, प्रस्तावित राम–राज्याभिषेक के फैलनेवाले हर्षदायक समाचार की उपमा प्रातःकाल में सर्वत्र फैलकर हर्ष प्रदान करनेवाली सूर्य–किरणों से दी गयी है, [23] कैकेयी की राम–वनवास–याचना विषयक कठोर वाणी को वज्र के समान [24], सम्पूर्ण पृथ्वी की धुरी धारण करनेवाले देवर लक्ष्मण एवं संसार की रक्षा का पौरुष धारण करने वाले पति राम के बीच में अवस्थित नीति से की गयी है [25], वन में निवास करती हुई, अपनी पति की रक्षा करने वाली सीता की उपमा आँखों की अहर्निश रक्षा करने वाली पलकों से की गयी है [26], श्रीराम से लक्ष्मण की ओर और लक्ष्मण से श्रीराम की ओर आवर्तित–प्रत्यावर्तित होती हुई शूर्पणखा की तुलना तट से टकराकर नाव की ओर और नाव से टकराकर तट की ओर ठोकरें खानेवाली तरंगों से की गयी है [27], रावण द्वारा अपहृत सीता की उपमा जाल में आयी हुई मृग–वधू से दी गयी है[28], वियुक्ता नारी की उपमा आतपकालीन झुलसी हुई लता से, पृथ्वी की माता से एवं पत्रों की नूतन वस्त्रों से दी गयी है। [29] वृष्टि के पश्चात् की सद्यःस्नाता वनस्पतियों से आच्छादित तथा जल से भरी हुई गड्ढ़ोंवाली पृथ्वी की उपमा सद्यःस्नाता हरितकान्तियुक्त वस्त्र धारण करनेवाली तथा भरी हुई आँचलवाली कुलीन ललना से की गयी है। [30] उपमा के सारे अंगों का शब्दतः उल्लेख होने के कारण यहाँ पूर्णोपमा अलंकार की छटा द्रष्टव्य है। चन्द्रमा की उपमा आकाशरूपी सरोवर में विकसित शुभ्र कमल से, आकाशरूप नट के ललाट मे लगाये गये चन्दन–लेप से और संसाररूपी आसव का पान करनेवाले काल के पानपात्र से दी गयी है। [31] एक ही चन्द्रमा के अनेक उपमान वर्णित होने के कारण यहाँ मालोपमा अलंकार है।

नैमित्तिक कर्मों के अवसरों पर स्वामी के साथ उपस्थित सीता गृहवेदी पर उपस्थित अग्नि के साथ स्वाहा की तरह सुशोभित होती थी [32] तथा महाराजा जनक के अयोध्या आगमन पर बहनों से घिरी हुई सीता, पिता के चरणों मे प्रणाम करती हुई, ऋचाओं में प्रथम, वंदनीया एवं वंदना में प्रवृत्त ओंकार–वाणी की रत प्रतीत होती थी। [33] पिता विदेहराज जनक के जनकपुर प्रस्थान करने के उपरान्त दुःखी और अश्रुपूरित नयनों वाली सीता के प्रति श्रीराम के अग्रांकित कथन में पूर्णोपमा एवं रूपक अलंकार की युगपत छटा दर्शनीय है– 'हे प्रिय! कमलों के समान तुम्हारे दोनों नेत्र ओसपात के जलबिन्दुरूप अश्रु से क्यों भरे हुए हैं?

"तत्रागत्य विषण्णाया अश्रुप्लावितचक्षुषः।
निषद्य पार्वे सीतायास्तामपृच्छत्स मिष्टवाक्।।" [34]

प्रसवावस्था को प्राप्त सीता के अंगों की शोभा नवांकुर की उत्पत्ति के लिए उद्यत अंगों वाली लता के समान, चन्द्रमा से युक्त आकाश की तरह सम्पर्क और लगाव रखा और उनसे भी प्रेरित–प्रभावित हुए। वस्तुतः उपमा अलंकार और उसके भेदों–प्रभेदों के प्रयोग की दृष्टि से एवं उपमा की मौलिकता की दृष्टि से भी, 'वैदेहीचरितम्' संस्कृत–साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है।

निष्कर्ष

'वैदेहीचरितम्' पं० रामचन्द्र मिश्र–रचित प्रसिद्ध रामकाव्य है। संस्कृत में रचित इस महाकाव्य में अन्य विशिष्टताओं के साथ–साथ उपमा–अलंकार का सौन्दर्य आद्यन्त दृष्टिगोचर होता है। यों तो संस्कृत–साहित्य में उपमा के लिए कविकुलगुरु कालिदास प्रसिद्ध हैं, किन्तु 'वैदेहीचरितम्' के विद्वान् कवि ने भी उपमा के मौलिक और हृदयावर्जक प्रयोग इस कृति में किया है।

इस कृति में मिथिला की उपमा स्वर्ग से एवं उसके रक्षक महाराज सीरध्वज जनक की उपमा इन्द्र से दी गयी है। बाल्यावस्था को त्याग कर किशोरावस्था–रूप नये विकास को प्राप्त करनेवाली की उपमा विकसनरोधी पत्रावरोध को हटाकर खेलनेवाली कमल–कलिका से दी गयी है। पीतवस्त्र धारण कर विवाह–मंडल पर विराजमान निर्व्याज शोभाशील श्रीरामभद्र को स्वर्ग में इन्द्र की तरह, आकाश में सूर्य की तरह, सरोवर में कमल की तरह और वेदी पर अग्निदेव की तरह चित्रित किया गया है। सीता को महाराजा दशरथ शरीरधारिणी राजलक्ष्मी के समान, माताएँ अन्तःपुर की दीपप्रभा के समान तथा श्रीराम अपनी ही अपर देह के समान प्रतीत होते थे। इस प्रकार की अगणित उपमाओं से 'वैदेहीचरितम्' परिपूर्ण है, जिसमें उपमा के प्रायः सभी भेदों–प्रभेदों का सौन्दर्य मनोरम ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ

1. 'साकेत' : मैथिलीशरण गुप्त, मुख्यपृष्ठ
2. वैदेहीचरितम्, रामचन्द्र मिश्र, प्रकाशक–का0 सिं0 द0 संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार), संस्करण–1985 ई0, 1/9
3. उपरिवत्–1/21
4. उपरिवत्–1/33
5. उपरिवत्–1/39

6. उपरिवत्–1 / 56
7. उपरिवत्–2 / 4
8. उपरिवत्–2 / 2,3
9. उपरिवत्–2 / 13,14
10. उपरिवत्–2 / 23
11. उपरिवत्–2 / 44
12. उपरिवत्–2 / 50
13. उपरिवत्–2 / 57
14. उपरिवत्–2 / 65
15. उपरिवत्–2 / 68
16. उपरिवत्–3 / 18
17. उपरिवत्–3 / 38
18. उपरिवत्–4 / 19
19. उपरिवत्–4 / 29
20. उपरिवत्–4 / 32
21. उपरिवत्–5 / 6
22. उपरिवत्–5 / 22
23. उपरिवत्–5 / 23
24. उपरिवत्–5 / 31
25. उपरिवत्–5 / 45
26. उपरिवत्–5 / 53
27. उपरिवत्–5 / 69
28. उपरिवत्–5 / 105
29. उपरिवत्–6 / 26,27
30. उपरिवत्–6 / 29
31. उपरिवत्–7 / 28,29
32. उपरिवत्–7 / 15
33. उपरिवत्–7 / 38
34. उपरिवत्–7 / 50